Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 1459–1461

THE NEED OF INFORMATION TECHNOLOGY ON THE PROFESSIONAL INTEREST AND PROFESSIONAL ASPIRATIONS OF STUDENTS STUDYING AT HIGHER SECONDARY LEVEL

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूचि एवं व्यवसायिक आकांक्षओं पर सूचना प्रोधौगिकी की आवश्यकता।

Lipika Raj [1], Deepshikha Saxena [2]

[1] Researcher, Mangalayatan University, Mangalayatan University, Aligarh (U.P.), India
[2] Associate Professor, Mangalayatan University, Mangalayatan University, Aligarh (U.P.), India

ABSTRACT

English: Aspiration is the normal reaction of a human being through which a human being is eager to acquire knowledge. Different people have different aspirations based on different experiences. Applied research has emphasized the impact of information technology on professional aspirations, in which the training given in ICT and Polytechnic etc. is important. The present era is the era of communication and technology, due to the use of which the whole world has turned into a village. The contribution of information technology has become very important in all the fields of education, military, business, medicine and research. Keeping in view the demand and utility of modern times, the attitude of students and their aspirations can be developed through interesting information technology and vocational education. Students are the future of the country and build the nation. Quality educational development can be made effective by making students aware of new technology knowledge and information which makes students mature for future life on the global stage. It is certainly possible that in the near future the medium of teaching will depend on information technology instead of paper.

Hindi: आकांक्षा मनुष्य की वह सामान्य प्रतिक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य ज्ञान को जानने के लिए उत्सुक रहता है। भिन्न-भिन्न अनुभवों द्वारा भिन्न आकांक्षा रखता है प्रयुक्त शोध से सूचना प्रोद्योगिकी के व्यवसायिक आकांक्षाओं के प्रभाव पर बल दिया गया है, जिसमें आई.सी.टी. एवं पॉलीटेकनिक आदि में दी जानी वाली महत्वपूर्ण है। वत्र्तमान युग संचार और प्रौद्योगिकी का युग है, जिसके प्रयोग से सम्पूर्ण विश्व एक गाँव में तब्दील हो गया है। सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान शिक्षा, सैनय, व्यापार, चिकित्सा और अनुसंधान सभी क्षेत्रों में अत्यंत ही महत्वपूर्ण हो गया है। आधुनिक समय की माँग और उपयोगिता को देखते हुए छात्रों की अभिवृति का विकास एवं छात्रों की आकांक्षाओं को रूचिकर सूचना प्रौद्योगिकी और व्यवसायिक शिक्षा के माध्यम से बनाया जा सकता है। छात्र देश का भविष्य होता है एवं राष्ट्र का निर्माण करता है। छात्रों को नवीन प्रौद्योगिकी ज्ञान एवं सूचना से अवगत करा कर गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक विकास को प्रभावशाली बनाया जा सकता है जो छात्रों को विश्वपटल पर आगामी जीवन हेतु परिपक्व बनाती है। निश्चित रूप से संभव है कि निकट भविष्य में शिक्षण का माध्यम कागज के बजाय सूचना प्रौद्योगिकी पर निर्भर होगा।

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.2528

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

आकांक्षा मनुष्य की वह सामान्य प्रतिक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य ज्ञान को जानने के लिए उत्सुक रहता है। भिन्न-भिन्न अनुभवों द्वारा भिन्न आकांक्षा रखता है प्रयुक्त शोध से सूचना प्रोद्योगिकी के व्यवसायिक आकांक्षाओं के प्रभाव पर बल दिया गया है, जिसमें आई.सी.टी. एवं पॉलीटेकनिक आदि में दी जानी वाली महत्वपूर्ण है। वत्र्तमान युग संचार और प्रौद्योगिकी का युग है, जिसके प्रयोग से सम्पूर्ण विश्व एक गाँव में तब्दील हो गया है। सूचना

प्रौद्योगिकी का योगदान शिक्षा, सैनय, व्यापार, चिकित्सा और अनुसंधान सभी क्षेत्रों में अत्यंत ही महत्वपूर्ण हो गया है। आधुनिक समय की माँग और उपयोगिता को देखते हुए छात्रों की अभिवृति का विकास एवं छात्रों की आकांक्षाओं को रूचिकर सूचना प्रौद्योगिकी और व्यवसायिक शिक्षा के माध्यम से बनाया जा सकता है। छात्र देश का भविष्य होता है एवं राष्ट्र का निर्माण करता है। छात्रों को नवीन प्रौद्योगिकी ज्ञान एवं सूचना से अवगत करा कर गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक विकास को प्रभावशाली बनाया जा सकता है जो छात्रों को विश्वपटल पर आगामी जीवन हेतु परिपक्व बनाती है। निश्चित रूप से संभव है कि निकट भविष्य में शिक्षण का माध्यम कागज के बजाय सूचना प्रौद्योगिकी पर निर्भर होगा। आज का छात्र प्रौद्योगिकी से घिरा हुआ है जहाँ जानकारी के विशाल संग्रह तक पहुँच कर अपने व्यवसायिक आकांक्षाओं को पूरा करेगा। आकांक्षाओं का अर्थ होता है इच्छा या अभिलाषा। पहले बड़े ही सीमित अवसर होते थे रोजगार पाने के कारपेन्ट्री, ऑटो मोबाइल क्षेत्रों तक ही सीमित थे लेकिन अब इवेंट मैनेजमेन्ट, होटल मैनेजमेन्ट, कम्प्यूटर नेटवर्क मैनेजमेन्ट आदि जिसमें छात्र निपुण होकर बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। जब हर हाथ में हुनर होगा तभी हमारा देश विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा होगा। शिक्षा जीवन की आवश्यकता को पूत्रि करने का एक सशक्त माध्यम है, शिक्षा ही मानव को समाज का सक्रिय सदस्य बनाती है। जिससे वह अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन कुशलता पूर्वक कर सकता है। शिक्षक अपने ज्ञान कौशल के व शिक्षण व्यवहार से विद्यार्थियों के दृष्टिकोण, ज्ञान, चरित्र और व्यवहार व आदतों को स्थाई रूप देने वे वांछित साँचे में ढ़ालने का प्रयास करता है। यह सर्वसत्य है कि अच्छी शिक्षा व्यवस्था ही सुयोग्य नागरिक तैयार करती है। ज्ञान का प्रत्यक्षीकरण कराने वाला गुरू ही है जो सूचना तकनीकी के माध्यम से शिक्षणकला तथा विद्यार्थी के व्यवहार में वांछित परिवत्र्तन ला सकते हैं। शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है। शिक्षण, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम सके तीन ध्रुव हैं। शैक्षिक प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग विद्यार्थी की प्रभावोत्पारकता डालता है। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में विद्यार्थियों को अपने व्यवसाय के सामथ्र्य को सिद्ध करने के लिए ज्ञान कौशल दक्षता, मूल्टा व अभिवृति संबंधी योग्यता को अधिक परिवत्रित करने की आवश्यकता है। सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा छात्र को अपने शिक्षण कार्य को प्रभावी ढ़ंग से दक्षता के स्तर पर खरा उतरने व उपयुक्त कौशल अभिवृतियों तथा योग्यताओं से परिसम्बन्न कराना है प्रभावी शिक्षण के लिए एक ही सिद्धांत की पूर्ति पर्याप्त नहीं है बल्कि उद्देश्यों के प्राप्ति के लिए विभिन्न आई.सी.टी. का प्रयोग कर छात्रों को व्यावसायिक रूचि एवं आकांक्षाओं को रूचिपूणर्व बनाना आवश्यक होता है। भारतीय आधुनिक शिक्षा- 2010 किसी भी देश को शिक्षा का स्वरूप उसके समय एवं परिस्थिति के अनुसार होता है। शिक्षा परिवर्तनशील है इसलिए इसका स्वरूप भी बदलते रहता है। वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी एवं वैश्वीक सोच इस सदी की विशेषताएँ हैं। समाज इन्हीं प्रक्रियाओं पर आधारित है और आज की शिक्षा सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित है। आज आजादी के छः दशक बीत जाने के पश्चात जब हम भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर विहंगम् दृष्टिपात करने पर पाते हैं कि शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं। विद्यार्थियों एवं विद्यालय की संख्या में अविरल वृद्धि हुई है। महाविद्यालय, विद्यालय, दूरस्थ शिक्षा केन्द्रों की संचरना तकनीकी शिक्षा संस्थानों में भी वृद्धि हुई है। शिक्षा के क्षेत्र में आज भी भारत बहुत पीछे है। विश्व में सर्वाधिक निरक्षर भारत में ही हैं। बच्चों का एक बहुत बड़ा वर्ग अभी भी विद्यालयी शिक्षा दायरों से बाहर है। प्रत्येक राष्ट्र के विकास में वहाँ के शिक्षा प्रणाली का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है। प्रारंभिक शिक्षा हो या उच्च शिक्षा या तकनीकी शिक्षा या व्यवासायिक शिक्षा किसी भी राष्ट्र का आर्थिक विकास को प्रभावित करता है। शिक्षा के प्रसार में वृद्धि के साथ-साथ शिक्षा के स्तर में वृद्धि करके राष्ट्रीय विकास की दर को बढ़ाया जा सकता है। तकनीकी शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी के शिक्षा में गुणवत्ता लाया जा सकता है। जिससे राष्ट्र की प्रगति निश्चय ही सहज रूप से होगी। तकनीकी शिक्षा को विकास की उसी दर और विकास के लाभ को जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम मानते हुए शोधकत्र्ता इसकी गुणवत्ता और प्रासंगिकता से जुड़े कुछ मुद्दों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है और इस बात पर जोर देता है कि हमें तकनीकी को बढ़ावा देने का हर संभव प्रयत्न करने चाहिए। तकनीकी शिक्षा और व्यवसायिक रूचि एक ऐसा माध्यम है जो भारत को विकास के उच्चतर मार्ग पर अग्रसर कर सकती है। इस दायित्व को पूरा करने के लिए सरकार भी हमारे साथ है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि विद्यार्थी को वास्तविक परिस्थिति का ज्ञान हो तभी यह शिक्षा के स्तर को उन्नति के पथ पर अग्रसर कर सकता है। भारत में शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करना हमारी सवैंधानिक प्रतिबद्धता है। इस लक्ष्य को संपूर्ति में प्रयासरत शासन द्वारा विद्यार्थियों की तकनीकी शिक्षा से जुड़ा है। सूचना प्रौद्योगिकी विद्यार्थियों के अधिगम स्तर को ऊँचा उठाती है। शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन नहीं है यह न विचारों की समर्थन स्थली है और न नागरिकता की पाठशाला है। यह आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश की दीक्षा है सत्य की खोज में लगी मानव आत्मा का प्रशिक्षण है। मानवीय विकास क्रम में जैसे-जैसे मानव ज्ञान और विज्ञान के नवीन आयामों को प्राप्त करता हुआ तकनीकी विकास करता रहा वैसे-वैसे सूचना एवं संचार तकनीकी में भी विविध माध्यमों तथा उपकरणों का विकास होता गया। इस क्रम में डाक व्यवस्था बे-तार तकनीकी, रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, मास मीडिया, सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी एवं मोबाइल टेक्नोलॉजी आदि का विकास हुआ और हय प्रगति क्रम आगे भी नित्य नवीन तकनीकियों का सूचना एवं संचार के क्षेत्र में विकास करता रहेगा। छात्रों की शिक्षा में नित नई-नई तकनीक प्रयुक्त हो रही है। नई तकनीकों के द्वारा छात्र अपने विचारों को एक स्थान से विश्व के सभी क्षेत्र में साक्षा कर सकते हैं। नई तकनीकों का ज्ञान आज छात्रों के लिए आवश्यक हो गया है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के आकांक्षाओं को देखते हुए विद्यालयों में नई तकनीकी ज्ञान एक आवश्यक अंग बन गया है। किसी भी देश के विकास में उस देश की शैक्षिक व्यवस्था का बहुत अधिक महत्व होता है। ऐसी शिक्षा प्रशिक्षण जो छात्रों को निपुण बनाती है। उदाहरण के लिए आई.टी.आई. एवं पॉलीटेकनिक में दी जाने वाली शिक्षा। शिक्षा अपने वास्तविक आवश्यकताओं की प्राप्ति तभी कर सकती है। जब वह शिक्षा व्यावसायिक हो। यह शिक्षा आधुनिक युग की नई मांग है। व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए इसे राष्ट्रीय पाठ्क्रम संरचना 2005 (छब्थ्ए 2005) में भी सम्मिलित किया गया है। वर्तमान में उसी शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का स्थान दिया गया है। वर्तमान समय में मानव विज्ञान और तकनीकी ज्ञान के नये आयामों की खोज में अग्रसर है। आधुनिक युग में मानव दिनों दिन प्रगति करता जा रहा है। यह प्रगति केवल आर्थिक, राजैनैतिक, व्यावसायिक ही नहीं बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा सरलता से प्रगति हो रही है। मानव द्वारा ईच्छा को संतुष्ट करने के लिए पूर्ण रूप से कई प्रयास किए जा रहे हैं। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए आवश्यक है कि विद्यार्थी की व्यावसायिक आकांक्षा के विकास की ओर समुचित ध्यान देकर उसकी व्यावसायिक रूचि में वृद्धि कर सके। इस समस्या से संबंधित अनेक कार्य किये गये हैं, लेकिन किसी ने

पूर्ण रूप से इस समस्या पर कार्य नहीं किया। इन सब स्थितियों को ध्यान में रखकर शोधकत्र्ता ने उक्त समस्या की आवश्यकता महसूस की है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों को व्यावसायिक रूचि पर सूचना प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक आकांक्षाओं के प्रभाव का अध्ययन जीवन की आवश्यकता को पूरा करने के लिए शिक्षा आवश्यक है। जिससे व्यक्ति अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन कुशलतापूर्वक कर सकता है। छात्रों को ज्ञान परित्र व्यवहार आदर्तों को अच्छा रूप देने का प्रयास करता है। यह सर्वसत्य है कि अच्छी शिक्षा व्यवस्था ही अच्छा नागरिक तैयार करती है। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि वैश्वीकरण के इस वर्तमान दौर में विद्यार्थियों को अपने व्यवसाय के सामर्थ को सिद्ध करने के लिए ज्ञान, कौशल, दक्षता, मूल्य अभिवृति संबंधी योग्यताओं का अधिक परिवर्तित करने की आवश्यकता है। सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा व्यावसायिक शिक्षा देना सर्वाधिक सम्मानजनक व्यवसायों में से एक उच्च्तर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को आई.सी.टी. के प्रयोग द्वारा शिक्षण कार्य को प्रभावी ढ़ंग से अपनाया और प्रोत्साहन कक्षा में उच्च अभिप्रेरना का वातावरण बनाया जा सकता है। अतः शिक्षण को रूचिपूर्ण बनाना आवश्यक होता है। किसी भी देश की शिक्षा का स्वरूप उसके समय, परिस्थिति एवं परिवेश के सापेक्ष होता है। ये सब परिवत्र्तनशील है। इसलिए इसका स्वरूप भी समय-समय पर बदलता रहता है। आधुनिक युग वैश्विकरण एवं सूचना प्रौद्योगिकी का है। वैश्विक सोच इस सदी की विशेषता है। आज की शिक्षा का स्वरूप इन्हीं प्रक्रियाओं पर आधारित है। विद्यालयों की संख्या में अविरल वृद्धि हुई है। उसी तरह तकनीकी शिक्षा में भी वृद्धि हुई है। जिससे विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि पर सूचना प्रौद्योगिकी पर प्रभाव पड़ा है। सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा हम व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर ही एक विकसित राष्ट्र के रूप में उभर कर सामने आयेंगे। तकनीकी शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी आवश्यक परिवर्तन होना आवश्यक है। किसी राष्ट्र के विकास में उच्च एवं तकनीकी शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जो गुणवत्तापूर्ण होनी चाहिए। शिक्षा की गुणवत्ता बहुत हद तक आई.सी.टी. से प्रभावित होती है। प्रत्येक राष्ट्र के विकास में वहाँ की शिक्षा प्रणाली का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा के स्तर मे उन्नयन करके राष्ट्रीय विकास की दर को बढ़ाया जा सकता है। सूचना प्रौद्योगिकी के प्रसार का लाभ पर विद्यार्थियों में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति रूचि को बढ़ाया जा सकता है। वैज्ञानिक आविष्कारों ने मानव जीवन के कार्य क्षेत्र को प्रभावित किया है। ज्मबीदवसहवल प्रत्येक क्षेत्र में अपनी जगह बना ली है। इसके प्रभाव से शिक्षा भी अछूती नहीं रही है। आज व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान की नवीन शाखाओं का विकास हो रहा है। व्यावसायिक शिक्षा के ज्ञान को आत्मशात करने, ज्ञान का संचय, वृद्धि और सम्प्रेषण के विकसित आई.सी.टी. के ज्ञान एवं उपयोग की आवश्यकता है। वर्तमान में कई आई.सी.टी. का विकास हुआ है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के सामने आई.सी.टी. के द्वारा व्यावसायिक रूचि में आने वाली समस्या का निदान संभव है। शिक्षा के प्रकाश में व्यक्ति अपनी योग्यता, क्षमता, बौद्धिकता एवं विश्व में व्याप्त गुण एवं दोषों को दूर कर शिक्षित समझा जा सकता है। शिक्षा और व्यावसाय में बहुत घनिष्ठ संबंध है। यह दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। यदि हम दोनों के उद्देश्यों तथा प्रयोजनों पर गौर करें तो यह बात समझ में आती है कि आई.सी.टी. के द्वारा शिक्षा के कई उद्देश्य व्यक्ति में निहित सामथ्र्य की सीमा के उपयोग से विद्यार्थियों में उसका सर्वोंगीण विकास करना है। शिक्षा किसी व्यावसायिक के उन्नयन का अपरिहार्य सोपान है। उच्चत माध्यमिक स्तर के छात्रों में व्यावसायिक रूचि को हृदयस्थ करते हुए धनार्जन की मात्रा में प्रकार को निर्धारित करते हुए अपने अनुकूल व्यवसाय को चुनकर, व्यावसाय के अनुकूल अपने को ढ़ालकर आई.सी.टी. का प्रयोग कर व्यावसायिक के प्रति आकांक्षाओं को पूरा किया जा सकता है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Singh, S. (2002). New dimensions of information technology. New Delhi: Rawat Publication.
Singh, P. (2014), Information and communication technology in education, Agra: Rakhi Rawat Publication.
Sharma, K. (2006-07). Computer literacy and educational applications, Agra: Radha Prakashan Mandir.
Sharma, R. Mishra, M. (2014). Computer teaching, Delhi: Arjun Publication. House.
Sharma, S. B. (2015) Computer education, Agra: Rakhi Publication.
Shrivastava, R. and Madan, P. (2010) Information and communication technology, Meerut: R. Lal Book Depot.
Tripathi, S., Pandey, R. (2014). Modern Computer Education, Agra: Rakhi Publication
Vijay, S.K. (2009) Computer Science and Information Technology, Bhopal, Madhya Pradesh Hindi Granth Academy.
Verma, M. Bhargava, M. (2012). Primary Computer Education, Agra, Rakhi Publication
Sarkar, S. and Debbarma, M. (2019). Research Study: Attitude of the Teachers
Secondary School Willing to Tribal Community Towards Information Technology